समर्पण समारोह

हम यह क्षेत्र त्रिरत्नों को समर्पित करते हैं.
मानवी सम्बोधि का आदर्श
ऐसे बुद्ध को
हम या क्षेत्र समर्पित करते हैं.
जिस धम्ममार्ग के आचरण हेतु हम सिद्ध हुए हैं,
ऐसे धम्म को
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं।
जहाँ आपस में कल्याण मैत्री का आनंद हम लेते हैं,
ऐसे संघ को
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं।
यहां किसी भी व्यर्थ शब्दों का उच्चारण ना हो।
न यहां चंचल विचारों से हमारे मन
कंपीत हो।
पंञ्चशीलों के परिपालन के लिए,
ध्यान साधना के अभ्यास के लिए,
प्रज्ञा के विकास के लिए,
और सम्बोधि की प्राप्ति के लिए,
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं।
भले ही बाह्य जगत में संघर्ष प्रदीप हो,
परंतु यहाँ मात्र शान्ति रहे।
भले ही बाह्य जगत द्वेषाग्नी से भभक रहा हो,
परंतु यहां मात्र मैत्री रहे।
भले ही बाह्य जगत दुःख प्लवित हो,
परंतु यहां मात्र आनंद रहे।
केवल पवित्र समझे गये ग्रंथो के पठन से नहीं,
अथवा पवित्र समझे गए जल के सिंचन से ही नहीं,
बल्कि सम्बोधि प्राप्ति के प्रयासों द्वारा,
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं।

इस परिमंडल के सभी और,
इस पवित्र क्षेत्र के सभी ओर,
परिशुद्धि के विमल कमलदल खिले।
इस परिमण्डल के सभी ओर,
इस पवित्र क्षेत्र के सभी ओर,
दृढ़ संकल्पो का वज्र-तट खड़ा रहे।
इस परिमण्डल के सभी ओर
इस पवित्र क्षेत्र के सभी ओर,
संसार का निर्वाण में परिवर्तन करने वाली,
अग्निज्वाला प्रदीप्त हो।
यहाँ बैठकर, यहाँ अभ्यास कर,
हमारा मन 'प्रबुद्ध' बने।
हमारे विचार 'धम्म' बने
और हमारे आपसी सम्बन्ध 'संघ' बने।
सभी प्राणियों के सुख के लिए,
सभी प्राणियों के हित के लिए,
काया, वचन, और मन से
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं।

(उर्ग्येन संघरक्षित द्वारा रचित मूल इंग्लिश रचना का हिंदी अनुवाद)